चल बसना (मर जाना)– लाला रामलाल रात को चल बसे।

चूड़ियाँ पहनना (कायर होना)– क्या तुम लोगों ने चूड़ियाँ पहन रखी हैं, जो उसका अत्याचार सहन करते जा रहे हो

छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या में जलना)– मेरी तरक्की को देखकर तुम्हारी छाती पर साँप क्यों लोट रहा है?

छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना)– शिवाजी ने औरंगज़ेब के छक्के छुड़ा दिए थे।

छाती पर मूँग दलना (जान-बूझकर दुख देना)– यह अनचाहा मेहमान एक हफ़्ते से मेरी छाती पर मूँग दल रहा है

जंगल में मंगल होना (सुनसान स्थान में आनंद का वातावरण)– अब तो दूर-दराज पहाड़ों पर भी रेस्तरां खुलने में मंगल हो रहा है।

जान पर खेलना (प्राणों को संकट में डालना)– देश की रक्षा के लिए सैनिक जान पर खेल जाते हैं।

टेढ़ी खीर होना (काम कठिन होना)– एवरेस्ट पर चढ़ना टेढ़ी खीर है।

टाँग अड़ाना (दखल देना)– मेरे बनते हुए काम में टाँग अड़ाने की कोशिश मत करना।

तिल का ताड़ बनाना (छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ा देना)– मीडिया वाले तिल का ताड़ बनाने की कला में मा

तलवे चाटना (खुशामद करना)– नौकरी पाने के लिए मैं किसी के तलवे नहीं चाट सकता।

OPPO F15 · ©Shot By S.K.R
2021/02/03 22:27

कर चाटना (वचन से मुकरना)– मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता क्योंकि थूककर चाटना तुम्हारी पुरानी आदत है।

ली का बैंगन होना (सिद्धांतहीन व्यक्ति)– आजकल के नेता तो थाली के बैंगन हैं, उनका कोई सिद्धांत नहीं होता।

तों तले उँगली दबाना (हैरान होना)– ताजमहल के सौंदर्य को देखकर पर्यटक दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं।

ल न गलना (तरकीब न चलना)– मेरे यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गल सकती, कहीं और जाओ।

-दो ग्यारह होना (भाग जाना)– नौकर मालिक के रुपए लेकर नौ-दो ग्यारह हो गया।

क में दम करना (बहुत तंग करना)– पुलिस ने पटरी पर बैठकर सामान बेचने वालों की नाम में दम कर रखा है।

गड़ी उछालना (अपमानित करना)– तुमने भरी सभा में रामलाल की पगड़ी उछालकर अच्छा नहीं किया।

हाड़ टूटना (भारी कष्ट आ पड़ना)– पिता की अचानक मृत्यु से राजीव लोचन पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है।

ोहा लेना (डटकर मुकाबला करना)– हमारी सेना शत्रु से लोहा लेने को पूरी तरह से तैयार है।

ाल-पीला होना (बहुत क्रोधित होना)– तुम भी अजीब हो, इतनी छोटी-सी बात पर लाल-पीले हो रहे हो।

लोकोक्तियाँ

धा क्या चाहे दो आँखें (बिना प्रयास के मनचाही वस्तु मिल जाना)– राकेश को गणित समझने में कठिनाई हो रही थी, उसे एक अच्छा गणित का अध्यापक किराएदार के रूप में मिल गया। उसके लिए तो 'अंधा क्या चाहे, दो आँखें' वाली कहावत सिद्ध हो गई।

आ बैल मुझे मार (खुद मुसीबत मोल लेना)– तुमने रिश्तेदारों को अपने यहाँ बुलाकर आ बैल मुझे मार वाला काम किया है, अब क्यों रोते हो?

ाम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ)– मैंने जितने रुपए में किताब खरीदी थी, पढ़कर उतने में ही बेच दी। सी को कहते हैं- आम के आम गुठलियों के दाम।

क अनार सौ बीमार (चीज़ कम ग्राहक अधिक)– आजकल नौकरी तो एक होती है, पर प्रार्थना-पत्र सैंकड़ों में आते हैं। क अनार सौ बीमार वाली स्थिति है।

धजल गगरी छलकत जाय (ओछा व्यक्ति ज्यादा दिखावा करता है)– मोहन ने थोड़ी-सी संस्कृत क्या पढ़ ली, वह यं को पंडित समझने लगा है। इसी को कहते हैं- अधजल गगरी छलकत जाय।

केला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता)– इस सैनिक ने आतंकवादियों से क्कर लेकर जान दे दी, भला अकेला चना कैसे भाड़ फोड़ सकता है।

क ही थाली के चट्टे-बट्टे (एक ही प्रकार के)– आजकल किस नेता पर विश्वास करें, सभी एक ही थाली के ट्टे-बट्टे हैं।

दा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक काम का थोड़ा फल मिलना)– मैंने सारा दिन मेहनत की, शाम को मिले केवल स रुपए। यह तो वही बात हुई, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

र की दाढ़ी में तिनका (अपराधी स्वयं डरा रहता है)– रिश्वत की बात सुनते ही आप क्यों झल्ला उठे, कहीं चोर की ढ़ी में तिनका तो नहीं है।

ला अक्षर भैंस बराबर (बिल्कुल अनपढ़)– सीता को पत्र क्या लिखूँ, क्योंकि उसके लिए तो काला अक्षर भैंस र है।

OPPO F15 - ©Shot By S.K.R